Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 11, Issue 1 | May 2023 - October 2023 | pp. 1-6

भारत में बदलता शिक्षा का स्वरूप

डॉ. रोहित कुमार जैन

विभागाध्यक्ष

बी.एड., भगवान आदिनाथ कालेज ऑफ एजूकेशन महर्रा, ललितपुर (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

भारत विश्व गुरु बनने का सपना देख रहा है। इसके सपने को साकार करने में निरन्तर प्रयत्नशील भी है। आज बदलती दुनिया के कदम से कदम मिलाकर चलने की तैयारी कर रहा है। आज का युग आर्टीफिसियल इंटेलीजेन्सी का युग है। इस युग परिवर्तन के अनुसार भारत ने अपनी शिक्षा नीति में परिवर्तन कर उसे नया स्वरूप प्रदान किया है। जिसमें शिक्षा के प्रत्येक पहलू पर कार्य किया गया है। शिक्षा व्यवस्था बेसिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा और शोध सभी में परिवर्तन किया गया है और इसके सफलता पूर्वक संचालन के लिए नये आयोग का भी गठन किया जायेगा। शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के साथ-साथ शिक्षा में तकनीकी के प्रयोग का भी ध्यान दिया गया है। इस शोध पत्र में भविष्य के भारत की तैयारी के लिए विभिन्न पहलुओं और नई शिक्षा नीति 2020 को आधार मानकर अध्ययन कर मुख्य बिन्दु एवं उनके निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। नई शिक्षा नीति में शोध एवं स्नातक वर्ग की शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन का प्रावधान किया गया है जिसमें स्नातक को चार वर्ष एवं पृथक शोध विश्वविद्यालय की संकल्पना की गई है। इसके साथ-साथ शोध कार्य के लिए शोधार्थियों को आर्थिक सहायता का भी प्रावधान किया गया है जो पहले से परन्तु इसे बढ़ाकर किया गया है। विभिन्न संगठनों के स्थापना एवं उनके संचालन के लिए नई व्यवस्था का भी प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक प्राधिकारी जैसी संस्थानों को स्थापित करने की योजना भी है।

संकेताक्षर—*आर्टीफिसियल इंटेलीजेन्सी, शिक्षा नीति 2020, राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक, राष्ट्रीय अनुसंधान फाउडेशन*

प्रस्तावना

आज मानव संस्कृति में नये युग का आगाज हो रहा है जिसे आर्टीफिसियल इंटेलीजेन्सी युग का नाम दिया जाए तो कोई गलत नहीं होगा। प्रत्येक काल के उदय के उद्देश्य में मानव की आवश्यकता और मानव जीवन को कितना सरल और संभव बनाया जाए, रहा है। इसी क्रम में आज हम ऐसे युग में प्रवेश कर रहे है जिससे मानव जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन संभव है। इस परिवर्तन के लिए क्या मानव जन जीवन तैयार है? इन परिवर्तनों से मानव जीवन किस प्रकार से प्रभावित होगा? और इन परिवर्तनों का प्रभाव केवल उच्च वर्ग के लोगों को ही होगा? आदि प्रश्नों के उत्तर आने वाले समय में ही पता लगेंगे।

इस बदलते समय में मानव अर्थात सम्पूर्ण मानव जाति ही नहीं इन परिवर्तनों से संपूर्ण प्रकृति प्रभावित होगी। आगामी समय में सबसे बड़ी चुनौती शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले परिवर्तनों में है। क्या हमारा शिक्षक वर्ग और शिक्षण संस्थान इन परिवर्तनों के लिए तैयार है? शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तन की प्रमुख रुप से केवल पुस्तकों के लेखन से लेकर उनके प्रकाशन और उपलब्धता तक है। फिर शिक्षक उन परिवर्तनों में अपने आप को सहज महसूस कर पायेंगे या उन्हें आगे बढ़ा पायेंगे।

वर्तमान समय आज कम्प्यूटर युग है आज हर हाथ में दुनिया की जानकारी है। परम्परागत शिक्षा पद्धति से वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति संभव प्रतीत नहीं होती

ISSN 2348-3857

है। आज हमें केवल परम्परागत विषय से आगे सोचना होगा। इन्हीं सभी परिस्थितियों का ध्यान में रखते हुए भारत में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की दिशा और दशा दोनों में क्रांतिकारी परिवर्तन की तैयार की गई है। आगामी समय में भारत में प्रदान की जाने वाली शिक्षा का स्वरूप बदल जायेगा। इसके लिए नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के मूल स्वरूप में निम्न परिवर्तन कर दिये गये है।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा

स्कूली शिक्षा के विकास के साथ-साथ उसके पाठ्यचर्या में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस की जा रही थी अतः इसे पुनर्गठन किया जायेगा इसमें चार चरण में बांटा गया है। अर्थात 5+3+3+4 स्वरूप होगा।

1. बुनियादी स्तर—प्रथम पाँच साल की बुनियादी स्तर होगा जिसमें पहले 3 साल पूर्व प्राथमिक स्कूल के लिये तथा बाद के 2 वर्ष कक्षा 1 एवं 2 के लिये रखे गये है। इसमें बहुस्तरीय,खेल आधारित गतिविधि आधारित एवं खोजने पर आधारित सीखना होगा।

2. प्रारम्भिक चरण—3 वर्ष जिसमें कक्षा 3, 4, एवं 5 के लिये है।

3. मध्य चरण—यह चरण 3 वर्ष को होगा जिसमें कक्षा 6 से कक्षा 8 तक का शिक्षण कार्य होगा।

4. माध्यमिक चरण—माध्यमिक चरण 4 वर्षों का होगा जिसमें माध्यमिक शिक्षा कक्षा 9 से 12 तक को रखा जायेगा।

उच्च शिक्षा—भारतीय शिक्षा प्रणाली में 12वीं कक्षा के बाद दी जाने वाली शिक्षा को उच्च शिक्षा की श्रेणी में रखा गया है।

उद्देश्य

उच्च शिक्षा प्रणाली में सुधार करके देश भर में बहु अनुशासनात्मक उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित करना एवं वर्ष 2035 तक कुल नामांकन दर (Gross Enrollment Rate, GER राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक प्राधिकारी (NHERA)) को कम से कम 50 प्रतिशत तक बढ़ाना।

वर्तमान भारत में 800 से अधिक विश्वविद्यालय और 40000 महाविद्यालय है। AISHE के अनुसार 40 प्रतिशत से अधिक महाविद्यालय केवल एक ही कार्यक्रम चला रहे है। 20 प्रतिशत महाविद्यालयों में 100 से नीचे नामांकन है जबकि 40 प्रतिशत महाविद्यालयों में 3000 से अधिक नामांकन हो विगत वर्षों में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में काफी सुधार हुआ है परन्तु यह भी पर्याप्त नहीं है पिछले कई वर्षों में जी.ई.आर. 25 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है वर्तमान में अधिकांश विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में शोध की कमी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा में सुधार के लिये निम्न अनुशंसा की गई है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में उच्च शिक्षा के विखण्डन को समाप्त करना है बहुअनुशासनिक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में स्थानान्तरित करके उच्च शिक्षा में विखण्डन का अन्त करना।

21वीं सदी की जरूरतों को देखते हुए कहा जा सकता है कि एक उदार एवं व्यापकता के लिये हुए बहु अनुशासनात्मक शिक्षा ही हमारी उच्च शिक्षा का आधार होगी।

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा नियामक प्राधिकारी (NHERA) की स्थापना की जायेगी। यह स्वतंत्र प्राधिकरण पेशेवर, व्यवसाय शिक्षा सहित उच्च शिक्षा में मौजूद सभी व्यक्तिगत नियामकों का स्थान लेगी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग केवल उच्च शिक्षण संस्थानों क अनुदान सम्बन्धी कार्य को देखेगा।

वर्तमान में उच्च शिक्षण संस्थानों के मूल्यांकन के लिये राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (N.A.A.C.) है जो यू.जी.सी. के अर्न्तगत कार्य करती है। मसौरा समिति एन.ए.ए.सी. को स्वतंत्र एवं स्वायत्त संस्था बनाने की सिफारिश करती है।

एन.ए.ए.सी. की नई भूमिका

एन.ए.ए.सी. उच्च शिक्षा संस्थानों में श्रेष्ठ संस्थानों की पहचान करेगा और प्रत्येक 5 से 7 वर्षों में संस्थानों का मूल्यांकन करेगा। वर्तमान में संचालित सभी उच्च शिक्षण संस्थानों को 2030 तक एन.ए.ए.सी. के मूल्यांकन कराना अनिवार्य होगा।

उच्च शिक्षण संस्थानों का पुर्नगठन

मसौरा समिति ने वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए उच्च शिक्षण संस्थानों के पुनर्गठन की अनुशंसा की है उच्च शिक्षण संस्थानों को तीन प्रकार से पुनर्गठित किया जायेगा—

1. अनुसंधान और शिक्षण पर समान रूप से ध्यान केन्द्रित कने वाले अनुसंधान विश्वविद्यालय।
2. मुख्य रूप से शिक्षण ध्यान देने वाले विश्वविद्यालय।
3. केवल स्नातक स्तर शिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करने वाले कालेज।

उपरोक्त सभी प्रकार के विश्वविद्यालय एवं कालेज सभी शिक्षण संस्थान और अकादमिक, प्रशासनिक और वित्तीय अधिकार प्रदान किये जायेंगे तथा ये धीरे-धीरे पूर्ण स्वयंता की ओर बढ़ेंगे।

राष्ट्रीय अनुसंधान फाउडेशन की स्थापना

सभी विषयों में उत्कृष्ट एवं रचनात्मक अनुसंधान प्रस्ताव के लिये राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना की जायेगी। जिसमें प्रतिस्पर्धी अनुदान देने के लिये साथियों की समीक्षा और प्रज्ञतावों के सफलता को आधार रखा जायेगा। एन.आर. एफ. शोधकर्ताओं, सरकार, उद्योगों और मंत्रालयों के बीच एक सम्पर्क के रूप में कार्य करेगा।

पेशेवर शिक्षा

पेशेवर शिक्षा क्षेत्र को विस्तारित किया जायेगा। विशेष तौर पर चिकित्सा, नर्सिंग, कृषि क्षेत्र। भारत में पेशेवर शिक्षा के लिए योजना बनाने का कार्य आर.एस.ए. द्वारा किया जायेगा। नये संस्थान खोलते समय एन.एच.ई.आर.ए. के द्वारा एकत्रित आँकड़ों का लिया जायेगा। सभी पेशेवर अनुशासनों में किये जाने वाली शोध, एन.आर.एफ. द्वारा मिलने वाली वित्तीय सहायता की पात्र होगी। मौजूदा वित्तीय सहायता देनी वाली संस्थाएं जैसे—आई.सी.एम.आर. व आई.सी.ए.आर. भी अपनी वित्तीय सहायता जारी रखेगी। पेशेवर शिक्षा से सम्बन्धित सभी परिषदों नियामक की भूमिका में परिवर्तित करे उन्हें पी.एस. एस.बी. में बदला जायेगा।

शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग

शिक्षा प्रदान करने के स्वरूप में परिवर्तन—परामपरागत तरीके से प्रदान करने वाली शिक्षा पर्याप्त नहीं है आज वर्तमान में आवश्यकता है कि इस स्वरूप में परिवर्तन किया जाए। शिक्षा के क्षेत्र में टेक्नोलॉजी का प्रयोग से शिक्षा के प्रसार में सहायता मिल रही है। टेक्नोलॉजी ने शिक्षा प्रदान करने के स्वरूप को ही बदलकर रख दिया है इस बदलाव में टेक्नोलॉजी अहम भूमिका निभाई है। डिजिटल लर्निंग और स्मार्ट डिवाइसेज जैसे कम्प्यूटर, स्मार्ट फोन और टैबलेट के बढ़ते उपयोग ने स्टूडेंट लर्निंग को बेहतर बनाया है। ऐसे में फ्लिप्ड क्लासरूम शिक्षा में एक नया कॉन्सेप्ट है जहां स्टूडेंट्स घर पर सीखते हैं और क्लास में संबंधित एक्टिविटीज में हिस्सा लेते हैं।

फ्लिप्ड कक्षाएँ

फ्लिप्ड कक्षाएँ, पारंपरिक टीचिंग से एकदम अलग है। इस मॉडल में स्टूडेंट्स ऑनलाइन लेक्चर्स घर पर अपनी सुविधानुसार ले सकते हैं और अगले दिन क्लास में वे उसी लेक्चर से जुड़े असाइनमेंट करते हैं। पढ़ाई का यह तरीका न केवल सीखने की क्षमता में सुधार लाता है, बल्कि स्टूडेंट्स का स्कोर भी बेहतर होता है।

इसके तहत टीचर्स अपने लेक्चर्स रिकॉर्ड करते हैं और उन वीडियो को ऑनलाइन पोस्ट कर देते हैं, जिन्हें स्टूडेंट्स एक्सेस कर सकते हैं। छात्र इन वीडियोज को देखकर घर पर पढ़ते हैं और जब क्लास में आते हैं तो वे उस लेक्चर के साथ तैयार होते हैं। अगले दिन क्लासरूम में टीचर्स पोस्टेड लेक्चर से जुड़ी एक्टिविटीज करवाते हैं और स्टूडेंट्स इनमें हिस्सा लेते हैं। अगर टॉपिक से जुड़ा कोई भी कॉन्सेप्ट क्लियर न हो तो वे क्लास में सवाल पूछ सकते हैं। इससे टीचर्स हरेक स्टूडेंट की समस्या पर ध्यान दे पाते हैं। साथ ही स्टूडेंट्स से इंटरेक्शन के लिए भी उन्हें अधिक समय मिलता है। इसके अलावा छात्र अपनी समस्याएं टीचर्स से ऑनलाइन चैट के जरिए भी सुलझा सकते हैं।

फ्लिप्ड क्लासरूम को अपनाए जाने की मुख्य वजह है बेमेल शिक्षक-छात्र अनुपात के चलते खराब रिजल्ट। यानी स्टूडेंट्स ज्यादा और टीचर्स कम जिसका असर सीधे रिजल्ट पर होता है। दूसरी वजह यह भी है कि क्लास में पूरा वक्त लेक्चर में दिए जाने की वजह से स्टूडेंट-टीचर इंटरेक्शन काफी कम हो जाता है। फ्लिप्ड क्लासरूम इस चुनौती को पार करने में मदद करता है।

यह कैसे मददगार है?—चूंकि लेक्चर्स समयबद्ध नहीं होते, इसलिए उन्हें कितनी भी बार देखा जा सकता है। जिन छात्रों की सीखने की क्षमता अच्छी होती है, इस तरीके से उनका समय बचता है। स्टूडेंट्स जो कुछ भी पढ़ते हैं, अगले दिन वे उसे प्रैक्टिस में लाने की कोशिश करते हैं। पहले से की गई तैयारी लर्निंग स्किल्स में सुधार लाती है। कहां हो रहा है इस्तेमाल कुछ सालों पूर्व पश्चिम के हाई स्कूल्स में शुरू हुआ यह तरीका अब दुनिया भर में मशहूर हो रहा है। भारतीय भी स्कूल्स फ्लिप्ड क्लासरूम का उपयोग तेजी से कर रहे हैं।

फ्लिप्ड कक्षाओं के फायदे

- टीचर्स हरेक स्टूडेंट पर ध्यान देने के लिए अधिक समय निकाल पाते हैं और उनके सवालों का जवाब भी दे पाते हैं।
- स्टूडेंट्स को इससे लेक्चर को रिवाइज करने का मौका मिलता है।

ISSN 2348-3857

- इसके जरिए छात्र समूह में भी पढ़ाई कर सकते हैं और अपने आइडियाज एक दूसरे से शेयर कर सकते हैं।
- खुद की जिम्मेदारी पर पढ़ाई के चलते स्टूडेंट्स ज्यादा आत्मनिर्भर होते हैं।
- किसी वजह से अनुपस्थित चल रहे छात्र भी इसका फायदा ले सकते हैं।
- ऑडियो और विजुअल चीजें ज्यादा जल्दी और बेहतर ढंग से दिमाग में कैद होती हैं, इसलिए इन्हें याद रख पाना सरल होता है।

सीमाएँ

- चूंकि स्टूडेंट्स को लगता है कि वे किसी भी समय वीडियो देख सकते हैं, इसलिए वे लापरवाह भी हो सकते हैं।
- अगर वे सिर्फ वीडियो देखकर रह जाते हैं और एक्टिविटी लेक्चर में नहीं जाते तो इससे उन्हें कोई फायदा नहीं मिलेगा।
- उन स्टूडेंट्स के लिए यह बड़ी समस्या होगी जो अपने आप नहीं सीख सकते और जिन्हें हर बार मार्गदर्शन की जरूरत होती है।

बेहतर लर्निंग—फ्लिप्ड क्लासरूम पारंपरिक टीचिंग शैली को पूरी तरह से नए और इनोवेटिव कॉन्सेप्ट में बदलता है जो शिक्षकों को बेहतर ढंग से सिखाने और स्टूडेंट्स को आसानी से सीखने में मदद करता है। यह एक्टिव लर्निंग का एक प्रकार है जहां स्टूडेंट्स को व्यस्त रखने के लिए अलग-अलग स्ट्रैटेजी होती है।

शिक्षा पद्धति का मिश्रित रूप

यह वह प्रक्रिया है जिसमें पारंपरिक शिक्षा के गुणों जैसे शिक्षक और विद्यार्थी का भौतिक जगह पर रूबरू होकर कंप्यूटर तथा वेब समर्थित शिक्षा, उपकरणों के माध्यम से कक्षा का संचालन करना मिश्रित रूप (Blended learning) कहलाता है।

मिश्रित रूप की विशेषता

- यह पारंपरिक शिक्षा तथा ऑनलाइन शिक्षा के मुकाबले अधिक प्रभावशाली है।
- इसमें सहयोगी शिक्षात्मक अनुभव तथा सामाजिक तत्वों के सभी गुणों का समावेश होता है।
- विद्यार्थियों के लिए अनुसार अनुशासनात्मक शिक्षा तथा संतोष जैसे गुणों का समावेश होता है।
- तकनीकी के उपयोग के द्वारा अध्यापक तथा छात्रों के बहुमुखी विकास होता है।
- इसमें विद्यार्थी अपने शिक्षा की समझ का गुणात्मक तथा मात्रात्मक मूल्य को कंप्यूटर के आधार पर कर सकते हैं।
- इसमें समय तथा एनर्जी की भी बचत होती है।
- इसमें रोचकता बनी रहती है।

वेब आधारित अधिगम

इसके अन्तर्गत विश्व प्रसारित (World & wide) वेब से कार्य किया जाता है। यह सर्वरों (Servers) के रूप में स्त्रोतों को उपलब्ध कराती है। यह विश्व में सभी स्थानों पर बैठे हुए उपयोगकर्ताओं को नेट पर अधिगम की सामग्री प्रदान करने की क्षमता रखती है। विशेष व्यक्तियों द्वारा, संस्थाओं द्वारा, विद्यालयों द्वारा, संस्थाओं व संगठन द्वारा शिक्षा सम्बन्धी या व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति वेबसाइट स्थापित करने का प्रयास भी किया जाता है।

इस प्रकार के शिक्षा क्षेत्र में परिवर्तन के लिए हम भी तैयार भी हो रहे हैं। इसकी शुरुआत हमारी नई शिक्षा नीति में की गई है। परन्तु स्कूलों ,महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय का तंत्र अभी इसके लिए तैयार प्रतीत नहीं हो रही है। नई शिक्षा नीति में स्नातक स्तर पर बहुत से माइक्रो विषय के रुप में जोड़े गये है परन्तु इस विषयों का पढ़ाने के लिए शिक्षकों की उपलब्धता नहीं है और संस्थानों में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकसित नहीं है। आज हमें वर्तमान में देने वाले शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन की आवश्यकता है। इसे बाजार की आवश्यकताओं को जोड़कर विकसित करने की आवश्यकता है। यह हमारे लिए एक चुनौती के रुप में है इसके लिए हमें तैयार होना है।

वर्तमान समय में शिक्षा क्षेत्र की चुनौतियाँ

शिक्षकों को वर्तमान परिवेश में अपडेट की आवश्यकता—वर्तमान समय में शिक्षकों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करने की। परन्तु आज शिक्षक वर्तमान शिक्षण पद्धति में सहज नहीं है तो वह विद्यार्थियों को कैसे तैयार करेगा। हमारी सरकारें तो विद्यार्थियों को मोबाइल, लैबटॉप वितरित करके उन्हें तकनीकी के नजदीक ला रही है परन्तु शिक्षकों को इससे नहीं जोड़ा जा रहा है वर्तमान में लगभग 80 प्रतिशत शिक्षा इंटरनेट पर सहज

नहीं है। आज आवश्यकता शिक्षकों को टेक्नालॉजी फ्रेन्डली बनाने की उन्हें भी ऐसी योजनाओं से जोड़ने की जो वर्तमान की आवश्यकताओं का पूरा कर सके।

वर्तमान इन्फ्रास्ट्रक्चर में परिवर्तन—महाविद्यालयों में स्थापित प्रयोगशालाएँ अपडेट नहीं है। स्मार्ट क्लासेस नहीं है और उन्हें संचालित करने वाले नहीं है। जब तक इन सभी के लिए सरकार महाविद्यालयों के लिए आर्थिक सहयोग नहीं करेगी तब तक इस क्षेत्र में अधिक परिवर्तन की संभावना कम है। इसके लिए सरकार को समाज के धनवानों के सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करे एवं उनकी भागीदारी बढ़ाने की योजना तैयार करनी होगी।

इन्टरनेट की उपलब्धता—वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। प्रवेश से लेकर परीक्षा तक सभी प्रक्रिया आनलाइन के माध्यम से संपन्न हो रही है परन्तु अभी इंटरनेट की उपलब्धता सुगम नहीं है। इंटरनेट की वास्तविक स्पीड औसतन 10 एम.बी.पी.एस. की है। हमें अधिक तीव्रगति के इंटरनेट की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों की स्थिति और अधिक अच्छी नहीं है।

क्षेत्रीय भाषाओं एवं हिन्दी में ऑनलाइन कोर्सों की कमी—देश में सरकार ने भी स्वीकार किया है कि आनलॉइन शिक्षा का एक माध्यम हो सकता है और अच्छे शिक्षकों की इसके माध्यम से उपलब्धता आसान हो सकती है। निजी क्षेत्र में इस माध्यम का लाभ उठाकर कई व्यवसायी और समय के साथ चलने वाले लोगों इस अवसर का लाभ उठाकर करोड़ों की कम्पनियाँ स्थापित कर ली है और वे सफलता पूर्वक संचालित हो रही है। देश की सरकार ने भी ई-कन्टेट विकसित करने और उन्हें निशुल्क उपलब्ध कराने के लिए नये प्लेटफार्म विकसित किये है और इन प्लेटफार्म पर कोर्स भी सफलतापूर्वक संचालित हो रहे है। परन्तु अधिकांश विद्यार्थियों तक इनकी पहुँच सहज नहीं हो पा रही है। इसमें बाधा केवल भाषा आ रही है। इन प्लेटफार्म पर कोर्स और ई-कन्टेंट क्षेत्रीय भाषा या फिर हिन्दी भाषा में उपलब्ध नहीं है इस कारण हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है।

नई शिक्षा नीति 2020—नई शिक्षा नीति 2020 ने हमारी शिक्षा के स्वरूप में मूलभूत परिवर्तन किये है। जिससे देश की बेसिक शिक्षा से लेकर शोध तक में क्रांतिकारी परिवर्तन किए गये है। जिन्हें भूतल पर लाकर संचालित करना अपने आप में एक चुनौती है। कई महाविद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या इतनी कम है कि उन्हें संचालित करने में परेशानी हो रही है। इस कारण वहां की शिक्षण की स्थिति प्रभावित हो रही है और कई महाविद्यालयों में छात्राकंन इतना अधिक है कि उन्हें सफलता पूर्वक संचालन में परेशानी आ रही है। नई शिक्षा नीति में एकल महाविद्यालयों को समायोजित करने का एवं उन्हें बहुविषयक महाविद्यालयों में परिवर्तन करने का प्रावधान है। यह एक बहुत बड़ा कार्य है यह समय ही बतायेगा कि हम किस प्रकार से नई शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों को सफलतापूर्वक लागू कर पायेंगे या नहीं।

परम्परागत विषयों के अतिरिक्त विषयों और कोर्स की आवश्यकता—बदलते शिक्षा के स्वरूप को समझने की आवश्यकता है और वर्तमान में स्नातक वर्ग में संचालित विषयों से हमारे बदलते संसार की आवश्यकताओं को पूरा करना आसान नहीं है हमें ऐसे विषयों को शिक्षा के क्षेत्र में अनिवार्य करना होगा जो हमारी वर्तमान और भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। कम्प्यूटर आधारित विषयों को अनिवार्य बनाने के आवश्यकता है। तकनीकी के उपयोग और उसमें अनुसंधान को प्रेरित करने वाले विषयों की आवश्यकता आज की शिक्षा को है।

स्किल की कमी—वर्तमान समय बहुत तेजी से बदल रहा है। दिन प्रतिदिन कुछ नया हो रहा है। जिसके के लिए हम सभी का तैयार रहने की आवश्यकता है। इस बदलते परिवेश में हमें भी बदलने की आवश्यकता है। हमारे चारों ओर देखते है कि स्किल्ड व्यक्तियों की कमी है। आज हम जहां बेरोजगारी की समस्या का सामना कर रहे है वही हमें अपने कार्य में दक्ष लोगों की कमी महसूस हो रही है। आज स्किल्ड जेनेरेशन की आवश्यकता है। इस कमी को केवल शिक्षा के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। सामान्य तौर पर देखा जा रहा है कि जब विद्यार्थियों को शिक्षित होने की आवश्यकता है वे उस समय किसी अन्य कार्यों में ही व्यस्त है। हमें अपनी स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा में अधिक परिवर्तनों की आवश्यकता है। हम क्वान्टटी एजूकेशन पर तो ध्यान दे रहें है परन्तु क्वालिटी ऑफ एजूकेशन पर ध्यान नहीं दे रहे है। विश्व की सबसे अधिक जनसंख्या में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

बदले विश्व परिवेश में हमारी शिक्षा पद्धति, शिक्षा उद्देश्य और लक्ष्य में भी परिवर्तन होना चाहिए। शिक्षा व्यवसाय का आधार बनकर रह गई। इसे जीवन का आधार होना चाहिए। शिक्षा के इस बदलते स्वरूप में हमें अपने आप को अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने की भी चुनौती है। इस अंधाधुन्य विकास और आर्टीफिशिल इंटेलीजेन्सी के दौर में कहीं हम अपनी संस्कृति और विरासत की बलि ना चढ़ा दे। हम सब पर बहुत ही संतुलन के साथ आगे बढ़ने की जिम्मेदारी है। हमें आने वाली पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोकर परोसने की आवश्यकता है। जिसे आने वाली पीढ़ी सहज की स्वीकार करे उन पर से थोपी न जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एम.एच.आर.डी. द्वारा प्रकाशित गजट। डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट एम.एच.आर.डी. डॉट जीओवी डॉट इन
2. कुमार, रोहित, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, एक अध्ययन
3. मसौदा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2019
4. जैन, डॉ. सुनील कुमार, उच्च शिक्षा पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का प्रभाव-राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियाँ, इंस्टा पब्लिकेशन, बेंगलोर, 2023, पृ.सं. 1-7
5. बौद्ध, विनोद कुमार, ओपिनियन ऑफ दि स्टूडेंट्स ऑफ हायर एजूकेशन अबाउट न्यू एजूकेशन पॉलिसी, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू होने के पश्चात शिक्षा क्षेत्र में चुनौतियाँ, इंस्टा पब्लिकेशन, बेंगलोर, 2023, पृ.सं. 32-39
6. दयाल, भगवान, दि डिवेलपमेंट ऑफ मॉडर्न इण्डियन एजूकेशन, ओरियेण्ट लॉगमैन्स, 1955
7. सेन, जे.एम., हिस्ट्री ऑफ एलिमेण्ट्री एजूकेशन, कोस्मो पब्लिकेशन्स, (जनवरी 1, 2008)
8. त्यागी, जी.एस.डी. एवं पाठक, पी.डी., भारतीय शिक्षा की सम-सामयिक समस्याएँ, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 2013